बी.ए. हिंदी

तृतीय सेमेस्टर

प्रश्न पत्र - रीतिकाल

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न प्रत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों को रीतिकाल की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों से अवगत कराना। 2. रीतिकालीन काव्य तथा कवियों से परिचय कराना। 3. आदिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना। 4. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1.रीतिकालीन परिवेश : राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे। 2. रीतिकालीन शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा। 3. रीतिकालीन प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्न पत्र तीन खंडों (अ, ब, स) में विभक्त है।

खंड-अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न है, जिसमें संपूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा।

खंड-ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 संप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2, 3 एवं 4 में निर्धारित पाठ से कुल 04 काव्यांश (एक कवि से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खंड-स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6, 7, 8, 9 निबंधात्मक प्रश्न हैं, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई - 1

रीतिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
रीतिकाल की परिस्थितियाँ (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक)
रीतिकालीन काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ
रीतिकाव्य की प्रमुख धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त)

इकाई - 2

केशवदास –रामचन्द्रिका – संपादक –लाला भगवानदीन –रावण–अंगद संवाद

बिहारी&बिहारी रत्नाकर (संपादक–श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर')

1. मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
2. पाइ महावर दैंन कौं नाइनि बैठी आइ।
3. नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहिं बिकासु इहिं काल।
4. मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि, केसरि आड़ गुरु।
5. बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन–तन माँह।
6. तंत्री–नाद, कबित्त–रस, सरस राग, रति–रंग।
7. कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।
8. आवत जात न जानियतु, तेजहिं तजि सियरानु।
8. बड़े न हूजै गुननु बिनु बिरद–बड़ाई पाइ।

10. इत आवति चलि जाति उत चली, छसातक हाथ।

देव

1. झहरि–झहरि झीनी बूँद हैं परति मानौ।
2. डार द्रुम पलना, बिछौना नव पल्लव के।
3. कालिन्दी–कूल भयो अनुकूल।
4. खेलत फाग खिलार खरे अनुराग भरे बड़भाग कन्हाई।
5. जब तं कुँवर कान्ह ! रावरी कला निधान।

इकाई - 3

भूषण

1. साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धारि सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं।
2. कामिनि कंत सों जामिनि चंद सो, दामिनि पावस मेघ घटा सों।
3. उतरि पलंग ते न दियो है धरा पै पग, तेऊ सगबग निसि दिन चली जाती हैं।
4. सबन के ऊपर ही ठाढ़ौ रहिबे के जोग, ताहि खरो कियो छ हजारिन के नियरे।
5.ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

घनानन्द

1. उर–भौन में मौन को घूँघट कै दुरि बैठी बिराजति बात बनी।
2. हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।
3.परकाजहि देह को धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
4. अति सूधो सनेह को मारग है।
5. अंतर उदेग दाह, आँखिन प्रबाह आँसू।

आलम

1. जा थल कीन्हें बिहार अनेकन, ता थल काँकरी बैठि चुन्यौ करें।
2.चंद को चकोर देखै निसि दिन को न लेखै...
3.कंचन में आँच गई चूनो चिनगारी भई...
4. चारु तमाल प्रसून लता किधौं, स्याम घटा सँग बिज्जुल गोरी।
5. गुन रूप निधान बिचित्र बधू, हित प्यारी पिया मधु गंजन की।

इकाई - 4

पद्माकर

1. कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में...
2. फाग के भीरे अभीरन ते गहि गोबिन्द लै गई भीतर गोरी।
3. देखु 'पदमाकर' गुबिंद की अमित छवि...
4.चपला चलाकैं चहूँ ओरन तें चाह–भरी...
5. खेलिये फाग निसंक ह्वै आज मयंकमुखी कहैं भाग हमारो।

सेनापति

1. वृष कौं तरनि तेज सहसो किरन करि...
2. सारंग धुनि सुनावै घन रस बरसावै...
3. सिसिर तुषार के बुखार से उखारत है...
4. कालतैं कराल कालकूट कंठ माँझ लसै...
5.कोह कौं घटाइ, लोभ मोह न मिटाइ काम...

अनुशंसित ग्रंथ–

1- हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

2- हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

3- रीति काव्यधारा, संपादक–डॉ. रामचन्द्र तिवारी, डॉ. रामफेर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

4- बिहारी रत्नाकर, श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।